छत्रपति शिवाजी

चौथी कक्षा

(परिसर अध्ययन – भाग २)

भारत का संविधान

भाग 4 क

मूल कर्तव्य

अनुच्छेद 51 क

मूल कर्तव्य– भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह –

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्र ध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करें;

(ग) भारत की प्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण रखें;

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध है;

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करे;

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे;

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करें;

(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करे जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू ले;

(ट) यदि माता-पिता या संरक्षक है, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु वाले अपने, यथास्थिति, बालक या प्रतिपाल्य के लिए शिक्षा के अवसर प्रदान करे ।

शिक्षा विभाग का स्वीकृति क्रमांक
प्राशिसं/२०१४-१५/२१०२/मंजूरी/ड - ५०५/ ७५५ दिनांक ४.२.२०१४

छत्रपति शिवाजी

(परिसर अध्ययन - भाग २)

चौथी कक्षा

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे

आपके स्मार्टफोन में 'DIKSHA App' द्‍वारा, पुस्तक के प्रथम पृष्ठ पर Q.R. Code के माध्यम से डिजिटल पाठ्यपुस्तक एवं प्रत्येक पाठ में अंतर्निहित Q.R. Code में अध्ययन अध्यापन के लिए पाठ से संबंधित उपयुक्त दृक-श्राव्य सामग्री उपलब्ध कराई जाएगी।

प्रथमावृत्ति : २०१४
सुधारित आवृत्ति : सितंबर २०१६
पुनर्मुद्रण : जुलाई २०२०

© महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे ४११००४
इस पुस्तक का सर्वाधिकार महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के अधीन सुरक्षित है । इस पुस्तक का कोई भी भाग महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के संचालक की लिखित अनुमति के बिना प्रकाशित नहीं किया जा सकता ।

इतिहास विषय समिति :
डॉ. आ. ह. साळुंखे, अध्यक्ष
डॉ. सोमनाथ रोडे, सदस्य
डॉ. नीरज साळुंखे, सदस्य
श्री बापूसाहेब शिंदे, सदस्य
श्री मोगल जाधव, सदस्य सचिव

संयोजक :
श्री मोगल जाधव
विशेषाधिकारी, इतिहास एवं नागरिकशास्त्र

चित्र एवं सजावट : प्रा. दिलीप कदम,
श्री. देवदत्त बलकवडे, श्री. संजय शेलार

छायाचित्र : श्री प्रवीण भोसले

मानचित्रकार :
श्री रविकिरण जाधव, डॉ. नीरज साळुंखे

भाषांतरकार : प्रा. शशि मुरलीधर निघोजकर

समीक्षक : श्री हरीशकुमार दौलतराम खत्री

भाषांतर संयोजन :
डॉ. अलका पोतदार, विशेषाधिकारी हिंदी
संयोजन सहायक :
सौ. संध्या उपासनी, विषय सहायक हिंदी

निर्मिति :
श्री सच्चितानंद आफळे, मुख्य निर्मिति अधिकारी
श्री प्रभाकर परब, निर्मिति अधिकारी
श्री शशांक कणिकदळे, सहायक निर्मिति अधिकारी

अक्षरांकन : भाषा विभाग, पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे.

कागज : ७० जी.एस.एम., क्रिमवोव्ह

मुद्रणादेश :

मुद्रक :

प्रकाशक : श्री विवेक उत्तम गोसावी, नियंत्रक, पाठ्यपुस्तक निर्मिती मंडळ, प्रभादेवी, मुंबई-२५

प्रस्तावना

'बालकों का निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा अधिकार अधिनियम-२००९' और 'राष्ट्रीय पाठ्यक्रम प्रारूप २००५' के अनुसार महाराष्ट्र में 'प्राथमिक शिक्षा पाठ्यचर्या २०१२' द्वारा शालेय पाठ्यक्रम बनाया गया । इस पाठ्यक्रम का कार्यान्वयन शालेय वर्ष २०१३-१४ से क्रमशः प्रारंभ हुआ है । प्रस्तुत पाठ्यक्रम में यह स्पष्ट किया गया है कि तीसरी कक्षा से पाँचवीं कक्षा तक सामान्य विज्ञान, नागरिकशास्त्र और भूगोल विषय एकत्र रूप में 'परिसर अध्ययन भाग-१' में समाविष्ट रहेंगे तथा इतिहास विषय 'परिसर अध्ययन भाग-२' में स्वतंत्र रूप से समाविष्ट रहेगा ।

शासनमान्य पाठ्यक्रम के अनुसार पाठ्यपुस्तक मंडल ने चौथी कक्षा की प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक तैयार की है ।

अध्ययन-अध्यापन प्रक्रिया बालकेंद्रित हो, स्वयं अध्ययन पर बल दिया जाए, छात्र प्राथमिक शिक्षा के अंत तक 'उचित क्षमताएँ' प्राप्त करें; अध्ययन-अध्यापन प्रक्रिया आनंददायी हो; इस व्यापक दृष्टिकोण को ध्यान में रखकर प्रस्तुत पुस्तक तैयार की गई है ।

प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक में छत्रपति शिवाजी महाराज का प्रेरणादायी इतिहास सरल एवं प्रभावशाली शैली में कहानी के माध्यम से छात्रों के सम्मुख रखने का प्रयास किया गया है । शिवाजी महाराज का चरित्र और उनके कार्य संपूर्ण महाराष्ट्र और देश के लिए प्रेरणास्रोत माने जाते हैं । पाठ्यपुस्तक में शिवाजी महाराज के जीवन की स्फूर्तिदायी और प्रेरक घटनाएँ दी गई हैं । प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक के संदर्भ में विविध सामाजिक संगठनों, संस्थाओं और व्यक्तिगत स्तर पर आई शिकायतों और सुझावों की समिति द्वारा उचित पद्धति से छान-बीन करने के पश्चात पाठ्यपुस्तक का पुनर्लेखन किया गया है तथा आवश्यकतानुसार सुधार भी किए गए हैं ।

पाठ्यपुस्तक को अधिकाधिक निर्दोष और स्तरीय बनाने के लिए महाराष्ट्र के कुछ शिक्षाविदों और विषयतज्ञों द्वारा इस पुस्तक का समीक्षण कराया गया है । प्राप्त सुझावों और अभिप्रायों का ध्यानपूर्वक विचार कर प्रस्तुत पुस्तक को अंतिम स्वरूप दिया गया है । इतिहास विषय समिति, चित्रकार, छायाचित्रकार ने अत्यंत आस्था और परिश्रमपूर्वक इस पुस्तक को तैयार किया है ।

आशा है कि विद्यार्थी, अध्यापक और अभिभावक प्रस्तुत पुस्तक का स्वागत करेंगे ।

(चं. रा. बोरकर)
संचालक
महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे

पुणे
दिनांक : १९.०२.२०१४

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक **संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य** बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन सब में

व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता

और अखंडता सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) **को एतद् द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं ।**

राष्ट्रगीत

जनगणमन – अधिनायक जय हे
भारत – भाग्यविधाता ।
पंजाब, सिंधु, गुजरात, मराठा,
द्राविड, उत्कल, बंग,
विंध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा,
उच्छल जलधितरंग,
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिस मागे,
गाहे तव जयगाथा,
जनगण मंगलदायक जय हे,
भारत – भाग्यविधाता ।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय, जय हे ।।

प्रतिज्ञा

भारत मेरा देश है । सभी भारतीय मेरे भाई–बहन हैं ।

मुझे अपने देश से प्यार है । अपने देश की समृद्‌ध तथा विविधताओं से विभूषित परंपराओं पर मुझे गर्व है ।

मैं हमेशा प्रयत्न करूँगा/करूँगी कि उन परंपराओं का सफल अनुयायी बनने की क्षमता मुझे प्राप्त हो ।

मैं अपने माता–पिता, गुरुजनों और बड़ों का सम्मान करूँगा/करूँगी और हर एक से सौजन्यपूर्ण व्यवहार करूँगा/करूँगी ।

मैं प्रतिज्ञा करता/करती हूँ कि मैं अपने देश और अपने देशवासियों के प्रति निष्ठा रखूँगा/रखूँगी । उनकी भलाई और समृद्‌धि में ही मेरा सुख निहित है ।

छत्रपति शिवाजी (परिसर अध्ययन भाग – २) अध्ययन निष्पत्ति : चौथी कक्षा

अध्ययन के लिए सुझाई हुई शैक्षणिक प्रक्रिया	अध्ययन निष्पत्ति	
सभी विद्यार्थियों को अनुभवों का अवसर गुट/जोड़ी–जोड़ी से व्यक्तिगत रूप से देकर उन्हें निम्न बातों के लिए प्रेरित करना ।	**विद्यार्थी –**	
• परिवार के वरिष्ठ (जेष्ठ/सदस्यों से चर्चा करना और प्रश्न पूछना) जैसे – परिवार के कुछ लोग एक साथ रहते हैं, चर्चा करते हैं और कुछ दूर रहते हैं, यह समझकर दूर रहने वाले रिश्तेदार, स्नेही इनसे संभाषण कर, उनके घर, यातायात के साधन और उनके स्थान, लोक–जीवन इस विषय में जानकारी हासिल करना । • निडरता या बिना झिझकते अनुभवों के आधार पर प्रश्न तैयार करना और मनन करना । • माता–पिता/अभिभावक/दादी–दादा, पड़ोस के बुजुर्गों से चर्चा करना और उनके जीवन के भूतकालीन और वर्तमान दैनिक उपयोगी वस्तुएँ जैसे – कपड़े, बर्तन, कामों का स्वरूप, खेल की तुलना करना, विशेष जरूरतमंद बालकों का समावेश न करना । • शिवाजी महाराज की जीवनी से संबंधित घटनाओं पर आधारित भूमिका पालन करना । • संकटों को गुटचर्चा के द्वारा धैर्य, परिश्रम, समयसूचकता की सहायता से किस प्रकार मात दी जा सकती है, इसकी खोज करना । • घर/विद्यालय/समाज में आयोजित किए हुए विविध सांस्कृतिक/राष्ट्रीय/पर्यावरण, उत्सव/विविध प्रसंगों में हिस्सा लेना जैसे – प्रातःकालीन या विशेष सभा प्रदर्शनी/दीवाली/ओणम/वसुंधरा दिन/ईद आदि । वैसे ही कार्यक्रमों में नृत्य, नाटिका, अभिनय, सर्जनशील लेखन, कृति करना । (जैसे – दीए/रंगोली/पतंग बनाना/इमारतों की प्रतिकृतियाँ, नदियों के ऊपरी पुल की प्रतिकृति बनाना आदि । कथा, कविता, उद्घोषणाएँ, घटनाओं का वृत्तांत कथन, सर्जनशील लेखन अथवा किसी सर्जनशील कृति का प्रस्तुतीकरण करना । • पाठ्यपुस्तकों के साथ दूसरे संसाधनों को पढ़ना/खोजना जैसे समाचार पत्रों की कतरनें, श्राव्य सामग्री/कथा/कविता/चित्र/चित्रफिती/स्पर्श से महसूस होने वाली सामग्री, अंतरजाल/ग्रंथालय, तत्सम अन्य कोई भी सामग्री । • शिवाजी महाराज की जीवनी के उदाहरणों द्वारा पर्यावरण रक्षा जलसाक्षरता, समता, न्याय आदि के संदर्भ में सजगता विकसित करना । • पारंपरिक एवं आधुनिक पोशाकों में पाया जानेवाला अंतर समझ लेना । • राज्य की बोली भाषा, त्यौहार–पर्व, उत्सवों की जानकारी प्राप्त करना ।	04.95B.01 04.95B.02 04.95B.03 04.95B.04 04.95B.05 04.95B.06	विस्तारित कुटुंब में अपने तथा परिवार के अन्य सदस्यों के आपसी रिश्तों को पहचानते हैं । परिवार/विद्यालय/पड़ोस इन स्थानों पर निरीक्षण और अनुभव की हुई/समस्याओं पर स्वयं की राय देते हैं । (जैसे साँचाबद्ध रूप/भेदभाव/बाल अधिकार) गुट में एक साथ काम करते समय एक–दूसरे के प्रति आस्था, समानानुभूती और नेतृत्व गुण इन विषयों में अग्रणी रहते हैं और सक्रिय सहभाग लेते हैं । जैसे – अंतर्गृही (Indoor)/ बाहरी (Outdoor)/स्थानीय/समकालीन उपक्रम और खेल वैसे ही वनस्पतियों का ध्यान रखना, पशुपक्षियों को खाना देना आसपास की वस्तुओं/बुजुर्ग/दिव्यांगों के लिए प्रकल्प तैयार करना/भूमिका निभाना । छत्रपति शिवाजी महाराज के व्यक्तित्व की विविध स्फूर्तीदायी घटनाएँ बताते हैं । चतुरता, धैर्य और विवेक की वजह से मुसीबतों का सामना कर सकते हैं, यह बात शिवचरित्र से आत्मसात करते हैं । भौगोलिक और सांस्कृतिक कारणों से वस्त्रों में होने वाली विविधता बताते हैं ।

अनुक्रमणिका

अ.क्र.	पाठ का नाम	पृष्ठ क्र.
१.	शिवाजी महाराज–जन्म के पूर्व का महाराष्ट्र	१
२.	संतों के कार्य	३
३.	मराठा सरदार – भोसलों का पराक्रमी घराना	८
४.	शिवाजी महाराज का बचपन	१२
५.	शिवाजी महाराज की शिक्षा व्यवस्था	१७
६.	स्वराज्य स्थापना की प्रतिज्ञा	२१
७.	स्वराज्य का प्रारंभ	२५
८.	आंतरिक शत्रुओं पर नियंत्रण	२९
९.	प्रतापगढ़ पर पराक्रम	३२
१०.	दर्रे में घमासान युद्‌ध	३७
११.	शाइस्ता खान की दुर्दशा	४२
१२.	पुरंदर का घेरा और संधि	४५
१३.	बादशाह को चकमा दिया	५०
१४.	गढ़ आया पर सिंह गया	५३
१५.	एक अपूर्व समारोह	५७
१६.	दक्षिण अभियान	६०
१७.	गढ़ों और नौसेना का प्रबंधनअभियान	६५
१८.	लोककल्याणकारी स्वराज्य का प्रबंधन	७०

शिवाजी महाराज केवल महाराष्ट्र के ही नहीं बल्कि समस्त राष्ट्र के थे । उन्होंने महापुरुषों की शिक्षा से प्रेरणा ली थी । व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षा से स्वयं के लिए राज्य की स्थापना करना; उनकी इच्छा नहीं थी । उन्होंने तत्कालीन शासन व्यवस्था के गुण–दोषों का अध्ययन किया । परिणामस्वरूप अपनी विशिष्ट नीति और शासनव्यवस्था निर्धारित की । शिवाजी महाराज स्वयं धर्मनिष्ठ हिंदू थे पर अन्य धर्मों के प्रति उनकी भावना उदार थी । अन्य धर्मावलंबियों के पूजा स्थानों के निर्माण के लिए उन्होंने धन दिया । शिवाजी महाराज एक महान सेनानी थे । स्वतंत्रता की रक्षा के लिए जलसेना की आवश्यकता एवं महत्त्व का उन्हें ज्ञान था । अंग्रेजों एवं डच लोगों के आक्रमण से रक्षा करने के लिए उन्होंने शक्तिशाली नौसेना का निर्माण किया । प्रतापगढ़ की रचना देखकर उनकी युद्धकला की निपुणता का आभास होता है । शिवाजी महाराज का अपने देश पर असीम प्रेम था और मानवीय सद्गुणों की तो वे साक्षात प्रतिमूर्ति थे ।

– पंडित जवाहरलाल नेहरू

शिवकालीन चित्रकार मीर मुहम्मद द्‌वारा बनाया गया शिवाजी महाराज का चित्र ।

(मूल प्रति पेरिस के संग्रहालय में है ।)